The Academic
International Journal of Multidisciplinary Research
An Online Peer Reviewed / Refereed Journal
Volume 1 | Issue 1 | April-June 2023
Website: www.theacademic.in

उदय प्रकाश की कविताओं में दलित साहित्य

नीतू झा [1*] , डॉ. अनिता सोनी [2]
[1] शोधार्थी, जयवंती शा.हाक्सर महाविद्यालय, बैतूल, मध्यप्रदेश
[2] शोध निर्देशक, जयवंती शा.हाक्सर महाविद्यालय, बैतूल, मध्यप्रदेश

प्रस्तावना-

भारत धर्मनिरपेक्ष विकासशील देश है। जहां विभिन्न जाति धर्म के लोग निवास करते हैं। विकासशील भारत का संदेश है-'हिंदू मुस्लिम सिख इसाई आपस में है भाई-भाई' ,लेकिन इन्हीं कुछ धर्मों की भारतीय सामाजिक संरचना को ध्यान से देखते हैं, तो आजादी के इतने वर्षों बाद भी तमाम सुधारों के बावजूद कहीं न कहीं रूढ़ीवादी जाति परंपरा दिखाई देती है। हमें स्वत: ही स्पष्ट हो जाता है कि इन्हीं धर्मों में से कुछ जातियां दलित समाज के उस वर्ग को इंगित करती है जो अन्य की तुलना में सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक एवं राजनीतिक दृष्टि से कमतर आंकी जाती है। दलित शब्द का शाब्दिक अर्थ है- दबाया हुआ, सताया, कुचला, रोंदा गया ,उत्पीड़ित , सूचित, उपेक्षित, गिराया हुआ, जिसका दलन एवं दमन हुआ है। दलित वर्ग जिनका उच्चतर वर्ग से किसी भी प्रकार से संबंध बनाना परंपरा के अनुसार वर्जित है। दलित किसे और क्यों माना जाए इस संदर्भ में कंवल भारती कहते हैं- "दलित वह है जिस पर अश्पृश्यता का नियम लागू किया गया है। जिसे कठोर एवं गंदे काम के लिए बाध्य किया गया है । जिसे शिक्षा ग्रहण करने एवं स्वतंत्र व्यवस्था करने से मना किया गया और अछूतों ने सामाजिक निर्योग्यताओं की संहिता लागू की ,वही और वही दलित है और इसके अंतर्गत वे जातियां आती है, जिसे अनुसूचित जातियां कहा जाता है।"[1]

कहने का अर्थ है कि दलित उन जातियों को कहा गया जो कर्म की दृष्टि से भी हीन है जिन्हें किसी भी प्रकार से समानता के कोई अधिकार प्राप्त नहीं है। दलित शब्द उन सभी जातियों के लिए प्रयुक्त हुआ है जिन्हें चिरकाल से दबाया जा रहा है या प्रताड़ित किया जा रहा है। उनका किसी धर्म विशेष से संबंधित होना कोई महत्व नहीं रखता है। संकुचित अर्थों में वर्ण व्यवस्था के अंतर्गत आने वाली शूद्र जातियों को दलित स्वीकार किया गया है। शरण कुमार लिंबाले दलित शब्द की व्यापक अवधारणा को स्पष्ट करते हुए लिखते हैं "दलित वे नहीं है जो

*Corresponding Author : neetujha0710@gmail.com

गांव की सीमा से बाहर रहने वाली सभी अछूत जातियां आदिवासी,भूमिहीन खेत, मजदूर श्रमिक ,कष्टकारी जनता और यायावर जातियां सभी की सभी दलित शब्द से गठित होती है।"[2]

इस प्रकार स्पष्ट है कि दलित शब्द की व्याख्या सिर्फ जाति का उल्लेख करने से नहीं बल्कि उन सभी वर्गों का समावेश करना भी आवश्यक है जो आर्थिक दृष्टि से भी है दलित साहित्य दलित शोषण एवं उसके विरुद्ध परिवर्तन का संकल्प है। डॉक्टर भीमराव अंबेडकर ने संविधान सभा में कहा था कि "जब तक भारत में सामाजिक समानता और न्याय का बोलबाला नहीं होगा तब तक हमारी स्वतंत्रता जो हमने पचहत्तर सालों के महान संघर्ष के बाद प्राप्त की है और अक्षुण्ण न रहेगी। अछूतों और पिछड़े वर्गों में राजनीतिक और आर्थिक जागृति होने पर भी सामाजिक न्याय की जागृति के अभाव में वह सदा ही अछूत बना रहेगा इसलिए यह जरूरी है कि हमारी आजादी की रक्षा के लिए सामाजिक समानता की स्थापना हो। अछूतपन के अभिशाप को मिटाने का एकमात्र उपाय सामाजिक न्याय की आवश्यकता है।"[3]

वर्तमान समय में भी दलित समाज को बहुत बार अपमानित होना पड़ता है। दलित वर्गों में सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक तर्कों द्वारा जागृति लाने का प्रयास कर रहे हैं। कंवल भारती के इस विचार की पुष्टि प्रदान करने के लिए इसका यह कथन दृष्टवय है - "वही लोग तो,जो शासक वर्ग थे, जो देश की विशाल दलित आबादी को अपनी सामाजिक व्यवस्था में स्वयं गुलाम बनाए हुए थे। ये शासक वर्ग पूंजीपतियों के लिए आजादी मांग रहे थे और ये लोग थे जिनके पास आजादी की कोई स्पष्ट परिकल्पना तक नहीं थी"[4]

अनेकों साहित्यकारों ने दलितों की पीड़ा उन पर होने वाले शोषण को आवाज दी है। सदियों से दलित समाज का जीवन गुलामी में ही बीतता रहा,सम्मान और शिक्षा क्या होती है, वह इसका अहसास भी नहीं कर पाते थे। कवि उदय प्रकाश ने दलित विमर्श की कविताएं नये तेवर के साथ प्रस्तुत किया है। शिक्षित समाज में भी दलित उत्पीड़न की घटनाएं समाप्त नहीं हो रही है। कानून, संविधान के होते हुए भी मनुवाद आज भी खत्म नहीं हुआ है। इसी कारण कवि आक्रामक तेवर के साथ अपनी लेखनी को शब्द प्रदान करता है । साहित्यकार उदयप्रकाश जातिगत भेदभाव के प्रबल विरोधी है। आजादी के इतने वर्षों बाद तमाम कानूनों और सुधारों के बावजूद भी दलितों की स्थिति में बहुत अधिक सुधार नहीं आया है। कवि उदयप्रकाश ने दलित समाज की यातनाओं, विद्रूपताओं, दमन और शोषण का यथार्थ चित्रण किया है। कवि उदयप्रकाश का मानना है कि दलित तथा गैर दलित का भेदभाव अनुचित है। उदय प्रकाश की कविताओं में

जाति व्यवस्था के कुप्रभाव को गहरी संवेदना के साथ अभिव्यक्त किया है। उदयप्रकाश समकालीन परिस्थितियों से सरोकार रखने वाले कवि है। व्यवस्था विरोधी शक्तियों के विरुद्ध गुस्सा जाहिर करते हैं। समाज के बाहरी क्षेत्र में रहने वाले लोग अर्थात् कवि दलित के परिप्रेक्ष्य में द्वारपाल को संबोधित कर रहे है।

"तुम यहां कहां बैठो हो द्वारपाल?

यह तो निर्जन मैदान है और

चौखट दरवाजा नहीं है कहीं भी

तुम्हें सीमेंट से नहीं बनाया गया है द्वारपाल

तुम जागे हुए या सोए हो द्वारपाल

भूख तुम्हें लगी होगी द्वारपाल

क्या बीड़ी पियोगे द्वारपाल।"[5]

दलित, जो समाज के अभिजात्य वर्ग के साथ हिल मिलकर नहीं रह सकता। कवि इस वर्ग के प्रति अपनी संवेदनाओं को व्यक्त करता है। उनकी इस उम्मीद भरी नजरों को सहारा देना चाहता है। इसी कारण कवि उन्हें अहसास करा रहे हैं कि हक़ के लिए लड़ो। उदय प्रकाश की कविताएं गहरे अर्थों को समेट कर चलती है। कवि अपनी कविताओं के माध्यम से दलित वर्ग के प्रति अपनी संवेदनाओं को व्यक्त करता है। उदयप्रकाश दलित वर्ग को जागरूक करते हुए आगे कहते हैं कि अब तुम्हारे यातना के दिन गए। अब तुम भी बराबरी का दर्जा पा सकते हो। देश में कानूनी व्यवस्था ने तुम्हें सुरक्षा प्रदान की है, सम्मान का जीवन अब तुम भी जी सकते हो।

"वे जो असुरक्षित हुआ करते थे

गरीबों से

वर्षों पहले रात में

यह जगह छोड़कर

कहीं और चले गए हैं द्वारपाल

तुम अब बिल्कुल सुरक्षित हो द्वारपाल।"[6]

कवि दलित वर्ग को जागरूक करते हुए कहते हैं कि अब तुम्हारे यातना के दिन गए। अब तुम भी बराबरी का दर्जा पा सकते हैं। देश में कानूनी व्यवस्था में तुम्हें सुरक्षा प्रदान की है,सम्मान का जीवन अब तुम भी जी सकते हो। वर्तमान समय में भी दलित समाज को अनेकों बार अपमानित होना पड़ता है। कवि अपने समय के लोगों से प्रश्न करता है,कि शिक्षा, व्यवसाय, जीवन शैली सभी पक्षों में समान होने के बावजूद भी इस वर्ग के लोगों को सिर्फ जाति के आधार पर नीचा दिखाना कहां तक सही है।

"क्या उन्हें लगातार अपमानित

किया जाना चाहिए

जिन्होंने कभी स्वप्न देखे

जो अब भी अपने लिए और समूची

दुनिया के लिए

कोई स्वप्न देखना चाहते हैं।"[7]

कवि उदय प्रकाश पूछते हैं कि दलित समाज का आगे बढ़ना, समाज में सर उठाकर जीना, क्या उनका अधिकार नहीं है ? दलित समाज का बड़े सपने देखना,उन्हें पूरा करना क्या अपराध है ? वे उम्मीद के साथ कहते हैं कि अब समय आ गया है कि वर्ण व्यवस्था में हाशिए पर खड़े लोगों के दिन जरूर बदलेंगे। 'अजगर की नींद' कविता में लिखते हैं -

"लेकिन दिन

फिरते जरुर है

जैसे मेरे फिरेंगे

एक दिन"[8]

हमारे समाज में सदियों से चली आ रही रुढ़िवादी परम्पराओं से समाज के निम्न वर्ग को अनेकों जटिल समस्याओं का सामना करना पड़ता रहा है। निरन्तर संघर्ष के बाद यह हर वर्ग के जीवन में थोड़े बदलाव की उम्मीद लगाए बैठा है।

निष्कर्ष-

भारतीय समाज अनेक वर्गों में विभक्त है उदय प्रकाश ने इन वर्गों की महिलाओं को अपनी कविताओं में अभिव्यक्त किया है। कवि उदय प्रकाश ने शहरी-ग्रामीण , दलित एवं स्त्री समाज के विभिन्न पहलुओं को अपनी कविताओं में प्रस्तुत किया है। उदय प्रकाश जी दलित विमर्श की कविताएं नए तेवर के साथ प्रस्तुत की है शिक्षित समाज में भी दलित उत्पीड़न की घटनाएं समाप्त नहीं हो रही है कानून संविधान के होते हुए भी मनुवाद आज भी खत्म नहीं हुआ है इसी कारण कभी आक्रमक तेवर के साथ अपनी लेखनी को शब्द प्रदान करता है उम्मीद के साथ कहते हैं कि अब समय आ गया है कि वर्ण व्यवस्था में हाशिए पर खड़े लोगों के दिन जरूर बदलेंगे।

संदर्भ ग्रंथ-

1. ओमप्रकाश वाल्मीकि ,दलित साहित्य का सौंदर्यशास्त्र ,राधाकृष्ण प्रकाशन नई दिल्ली प्रथम संस्करण, पृष्ठ संख्या - 13

2. शरण कुमार लिंबाले, दलित साहित्य का सौंदर्यशास्त्र, वाणी प्रकाशन नई दिल्ली प्रथम संस्करण 2000, पृष्ठ संख्या - 53

3. दलित चेतना और हिंदी साहित्य, अनिता सिंह संस्करण 2013 यूनिवर्सिटी पब्लिकेशन नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या - 47,48

4. भारती कंवल,सामाजिक सांस्कृतिक और आंदोलन,दलित विमर्श की भूमिका,अमन प्रकाशन, नई दिल्ली, द्वितीय संस्करण 2013 पृष्ठ संख्या - 60

5. रात में हारमोनियम, उदय प्रकाश, पृष्ठ संख्या - 90

6. ibid.

7. ibid., pp. 79

8. अबूतर - कबूतर, उदयप्रकाश, पृष्ठ संख्या - 46